TRUTH AND VALIDITY

भूमिका :
तर्कशास्त्र में विचार के दो प्रमुख पहलू होते हैं –
1) सत्य (Truth) → यह कथनों (Statements या Propositions) से संबंधित है।
2) वैधता (Validity) → यह तर्कों से संबंधित है।

किसी भी तर्क की गुणवत्ता को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि उसमें प्रयुक्त कथन सत्य है या नहीं, और क्या निष्कर्ष तार्किक रूप से पूर्वकथनों (Premises) से निकलता है या नहीं। इस प्रकार, सत्य और वैधता तर्कशास्त्र के दो मौलिक स्तंभ हैं, जो विचार प्रक्रिया की सटीकता (Accuracy) और तार्किकता (Rationality) का निर्धारण करते हैं।

सत्य (Truth) : 'सत्य' शब्द का प्रयोग सामान्यतः उस वस्तु, तथ्य या स्थिति के लिए किया जाता है जो वास्तविकता से मेल खाती हो।
'जब कोई कथन वस्तुस्थिति (State of Affairs) या तथ्य (Fact) से मेल खाता है, तो वह सत्य कहलाता है। इसे Correspondence Theory of Truth कहा जाता है।
जैसे: 'पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है'। – सत्य क्योंकि यह वैज्ञानिक तथ्य से मेल खाता है।

सत्य की विशेषताएँ :
1) वस्तुनिष्ठ (Objective): सत्य किसी व्यक्ति की राय पर निर्भर नहीं करता। सत्य वही है जो वास्तविकता के अनुसार है। जैसे– 'जल 100°C पर उबलता है' – यह किसी की राय नहीं, बल्कि तथ्य है।
2) कथनों से संबंधित (Propositional): सत्य का निर्धारण केवल कथनों में किया जा सकता है, तर्कों में नहीं।
3) वास्तविकता से संबंध (Relation with Reality): सत्य का निर्धारण अनुभव, निरीक्षण, या प्रमाण के माध्यम से किया जा सकता है।
4) द्विआधारी स्वभाव (Binary Nature): एक कथन या तो सत्य होगा या असत्य – बीच की कोई स्थिति नहीं।

सत्य के सिद्धांत :

1. Correspondence Theory (अनुरूपता सिद्धांत)
सत्य वही है जो वस्तुस्थिति से मेल खाता है।
(Aristotle, Russell आदि का मत)

2) Coherence Theory (सुसंगति सिद्धांत)
सत्य वही है जो अन्य ज्ञात सत्यों के साथ तार्किक रूप से सुसंगत हो। (Hegel, Bradley आदि का मत)

3) Pragmatic Theory (व्यवहारिक सिद्धांत)
सत्य वही है जो व्यवहार में काम आता है या उपयोगी सिद्ध होती है।
(William James, John Dewey आदि)